RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय कृषि अवसंरचना व भारतीय कृषि की समस्याएँ

डॉ. चंचल शर्मा

सहायक आचार्य, लोक प्रशासन विभाग, सेन्ट विलफ्रेड पी.जी. कॉलेज, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान (भारत)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 December 2018

Keywords
भारतीय कृषि का एतिहासिक स्वरुप, कृषि अवसंरचना भारतीय कृषि सम्बन्धी समस्याएँ.

ABSTRACT

आदिकाल से कृषि मनुष्य की आर्थिक क्रिया रही है क्योकि कृषि के द्वारा मनुष्यों को भोजन व वस्त्र की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति होती रही है। कृषि का इतिहास मनुष्य सभ्यता के इतिहास से जुडा हुआ है। खेती का श्री गणेश लगभग हजारों वर्ष पहले आदि मानव द्वारा किया गया । खानाबदोश और आखटे के असुरक्षित जीवन को छोडकर उसमे एक सुरक्षा पूर्ण जीवन की शुरुआत की तथा स्थायी हार बनाकर और कुछ फसलों के बीजो को बोकर आहार की उपलब्धता को सुनिश्चित किया ।

कृषि का उदभव एवं विकास इसी आदि मानव के इन्ही कृषि प्रयत्नो के साथ शुरु हुआ प्रारम्भ में उसने उन्ही बीजो को चुना, जिनका उनके आहार से सम्बन्ध था । उसने अपने अनुभव से यह जाना कि इन बीजो को कब बोना है तथा फसल को कब काटा जाना है पहले तो उसने भूमि को हाथ से कुरेद कर बीज बोया । बाद में आदि मानव ने पत्थर या हड्डियों के औजारो द्वारा मिट्टी खोद बीज बोया । इस प्रकार उसने अपनी कार्यकुशलता बढाकर श्रम की बचत की । एक ही क्षैत्र में लगातार फसल उगाने से उत्पादन में कमी आने लगी । इसके आधार पर मानव को स्थान परिवर्तन की प्रेरणा मिली । नये स्थानो पर भूमि के प्राकृतिक क्रियाओं के प्रभाव से फिर उपजाऊ हो गई । इस प्रकार स्थानान्तरी कृषि का विकास हुआ । जनसंख्या वृद्धि के साथ साथ भूमि की खेती का दबाव बढता गया और स्थानान्तरी खेती सम्भावनाएँ कम होती गई । परन्तु कृषि के पिछडे क्षैत्रो, विशेषकर भारत के आदिवासी क्षैत्रो में खेती की यह प्रणाली प्रचलित है ।

प्रस्तावना-

भारत कृषि प्रधान देश है परन्तु कृषि की दशा संतोषजनक नही है । कृषि उत्पादन में वृद्धि जनसंख्या वृद्धि से कम होती है अतः देश के समक्ष खाद्य समस्या जटिल रुप धारण करती जा रही है । भारतीय कृषि अब भी परमपरावादी है । भारतीय किसान खेती व्यवसाय के रुप में नहीं करता है बल्कि जीविकोपार्जन के लिए करता है । कृषि की पुरानी परम्परागत विधियों, पूंजी की कमी, भूमि सुधार की अपूर्णता, विपणन एवं वित्त सम्बन्धी कठिनाईयों आदि के कारण भारतीय कृषि की उत्पादकता अन्यन्त न्यून है ।

कृषि क्षेत्र की निरंतर खराब होती स्थिति के कारण देश के सकल घरेलू उत्पाद के लिए दंसवी योजना में निर्धारित आठ फीसदी की विकास दर हासिल होना संभव प्रतित नही होता है ।

भारतीय कृषि की समस्याएँ-

भारतीय कृषि की निम्न समस्याए है-

1. भूमि पर जनसंख्या का निरन्तर बढता हुआ भार-

भारत में जनसंख्या तीव्र गति से बढ रही है अतः भूमि पर जनसंख्या का भार निरन्तर बढ रहा है जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति उपलब्ध भूमि का औसत कम होता जा रहा है पोष्टिक भोजन देने के लिए भारत में क्षैत्र बहुत कम है ।

2. बाढ एवं जल भराव की समस्या-

भौतिक आपदा के रुप में बाढ़ एवं जल भराव की समस्या निश्चित ही संतुलित भूमि उपयोग के परिवर्तन को प्रेरित करती है । नदी बाहुल्य वाले शाहजहाँपुर जनपद में कृषि विकास की मन्द गति में बाढ़ एवं जल भराव की समस्या भी प्रमुख है । क्योकि जनपद का दक्षिणी पश्चिमि एक तिहाई भाग बाढ़ की विभीषीका का कोप भोजन बना हुआ हैं जिसके अन्तर्गत तहसील व परगना जलालाबाद, शाहजहॉपुर, जमौर एवं खेडा बझेडर परगने प्रमुख है । अतिवृष्टि बाढ़ का कारण बनती है । जिससे खरीफ के क्षैत्रफल में गिरावट हो जाती है । कभी कभी बाढ विलम्ब से आती है जिससे खेती में खडी खरीब फसले भी विनिष्ट हो जाती है । बाढ जल की फसल को प्रभावित करता है ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जिसके फलस्वरुप उत्पादन गिर जाता है तथा कृषि विकास की गति मन्द हो जाती है।

3. भूमिक्षरण की समस्या-

बाढ एवं वर्ष पर आधारित भूमि क्षरण समस्या भी जनपद के कृषि विकास में बाधक है जिसमें मिट्टू की ऊपरी उर्वरक परत कटाव ग्रस्त हो जाती है। जिससे मिट्टी की उर्वरता में भारी गिरावट हो जाने से कृषि उत्पादन गिर जाता है।

4. अनावृष्टि की समस्या-

कृषि के लिए वर्षा जल का महत्वपूर्ण होना भारतीय कृषि प्रमुख विशेषता रही हैं। वर्षा तथा शस्य भूमि उपयोग के मध्य सहचर्य का सम्बन्ध होता है। क्योकि वर्षा की मात्रा तथा उसका वितरण एवं उत्पादन प्रारुप को प्रभावित करता है। आस्टिन मिलर के अनुसार मानसून वर्षा का देर से आने की अपेक्षा जल्दी समाप्त हो जाना अधिक विनाशकारी होता हैं।

भूमि उपयोग की समस्या

भूमि के सन्तुलित उपयोग भूमि उपयोग के तत्वों तथा मानव परिस्थिति की क्षमता को प्रदर्शित करता है।

1. भूमि उपयोग की समस्या-

भूमि का सन्तुसलित उपयोग भूमि उपयोग के तत्वों तथा मानव परिस्थिति की क्षमता को प्रदर्शित करता है। अनेक कारक उत्तरदायी है। जिनमें जनसंख्या वृद्धि, शस्य कम गहनता एवं कृषि क्षमता, सिचाई तथा आर्थिक उत्पादन का योगदान प्रमुख होता है। जनसंख्या का बढता हुआ भार सिमित क्षेत्र के भूमि उपयोग प्रारुप में आवश्यक परिवर्तन करता है जो कृषि तथा अकृषिय भूमि की अन्तक्रियाओं का परिणाम है।

2. भूमि सुधार जाति समस्याएँ-

यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही भूमि सुधार व्यवस्था में सुधार लाने हेतु अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये गये है तथा महत्वपूर्ण प्रयासों से कृषि के परिवर्तनशील प्रतिरुपो में आवश्यक परिवर्तन भी हुए इनमें आज भी समस्याएं विद्यमान है जो कृषि विकास में बाधक है। सुधार कार्यक्रम में चकबन्दी जोताकार तथा सहकारी कृषि का विस्तार कार्य महत्वपूर्ण है। परन्तु अधिकारीयों से अनियमित अनाधिकृत गठबन्धन, नियोजन विहीन निर्धारण, जातिवाद ग्रामीण सहयोग की कमी व कर्मचारी संख्या कम आदि असफलता के कारण रहे है।

3. मिट्टी की न्युन उर्वरता की समस्या-

पौधों का अंकुरण विकास तथा उनकी पृथ्टता का सीधा सम्बन्ध उस पोषण शक्ति से होता है जो उसे भूमि से प्राप्त होती है। रसायनिक उर्वरको के प्रचलन के पूर्ण भूमि उर्वरता वृद्धि हेतु पशुओं द्वारा गोबर व हरी खाद प्रयोग होती थी। बार बार फसलो उत्पादन से भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण होती है, गहन कृषि कार्यक्रम के व्यवस्थित स्वरुप में उर्वरको का अधिकाधिन प्रयोग की समस्या प्रमुख है।

सन्दर्भ सूची-

1.डॉ. सिह सुदामा (1994) भारतीय अर्थव्यवस्था समस्याए एवं नीतिया नील कमल प्रकाशन (गोरखपुर) पेज न. 258

2.डॉ. कुमार प्रमीला एवं डॉ. श्री कमल शर्मा कृषि भूगोल (1980) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पेज न. 1

3.डॉ. शर्मा विवेक (2003) कृषि प्रबन्ध प्रकाशन अर्जुन पब्लिकेशन्स हाऊस पेज न. 126

4.उपर्युक्त 1 2 3

5.खण्डेला मानचन्द (2008) भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां अरिहन्त पब्लिशिंग हाऊस

RRIJM 2015, All Rights Reserved